P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11* February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

बच्चन के काव्य में प्रतीक–विधान

अरुण कुमार
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

साहित्य में प्रतीक और बिम्ब समय और परिवेश के अनुसार अपने विशिष्ट अर्थ में प्रयोग किये जाते रहे हैं। हरिवंश राय 'बच्चन' उत्तर छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं। उनका रचना संसार मानव जीवन के विभिन्न आयामों का एक गुलदस्ता है। 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशा निमन्त्रण', 'एकान्त संगीत', 'सतरंगिणी', 'बंगाल का काल' आदि रचनाओं में वे हालावाद से चलकर सामाजिक समरसता के मार्ग से होते हुए आध्यात्मिकता के उच्च शिखर पर पहुँचते हैं। इनके काव्यों में प्रयुक्त शब्द हाला, बाला, मधुशाला, मधुकलश, साकी आदि नितान्त मस्ती, फक्कड़, एवं अल्हणता का अभास कराते हुए भी जब वे अपने आध्यात्मिकता के प्रतीकात्मक अर्थ में प्रयुक्त होते हैं तो वही उदात्त बन जाते हैं। प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से ही वे अधिभौतिकता से आध्यात्मिकता तक का सफर तय करते हैं।

मुख्य शब्द : प्रतीक , हाला, मधुबाला, मधुशाला, संसृति, मधुपात्र, मयूरी, नागिन, हंस, मानसरोवर।

प्रस्तावना

प्रतीक शब्द का अर्थ है–'चिह्न' 'प्रतिनिधि' या 'प्रतिरूप'। प्रतीक का प्रयोग उस दृश्य वस्तु के लिये किया जाता है, जिसका समानता के कारण किसी अदृश्य वस्तु के साथ तादात्म्य स्थापित किया जा सके। जब कवि अपने भावों को सीधे–सीधे शब्दों में अभिव्यक्त करने में असमर्थ होता है अथवा अपने भावों की भाषा की धार को तेज करने का प्रयास करता है तब वह प्रतीकों की सहायता लेता है। ये 'प्रतीक' केवल चिह्न, प्रतिरूप या संकेत का आभास ही नहीं कराते बल्कि उस वस्तु की जीवन्तता एवं उसके सक्रिय प्रतिनिधित्व का बोध भी कराते हैं। प्रतीक के माध्यम से कवि अपने भावों को अभिव्यक्त करने में सहज ही सफल हो जाता है। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन प्रतीकों से परिपूर्ण है। अमूर्त चिन्तन को मूर्त रूप देने में वह प्राचीनकाल से ही प्रतीकों का सहारा लेता रहा है, जैसे– वीरता का प्रतीक 'सिंह', पवित्रता का प्रतीक 'श्वेत रंग', कायरता का प्रतीक 'शृंगाल', चतुरता का प्रतीक–'लोमड़ी', सौभाग्य का प्रतीक 'सिंदूर', चूड़ियाँ, भाई–बहन के पवित्र सम्बन्ध का प्रतीक 'राखी' है।

समय और परिवेश के अनुसार प्रतीकों का अर्थ परिवर्तित होता रहा है। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, छायावाद, एवं छायावादोत्तर काल की रचनाओं के वृहद अध्ययन से यह बात और अधिक पुष्ट हो जाती है। आदिकाल से लेकर उत्तर छायावादी कविता के हालावाद के प्रतिनिधि कवि हरिवंश राय 'बच्चन' की कविताओं में हाला शब्द के बदलते प्रतीकात्मक स्वरूप को आभास किया जा सकता है।

हाला अर्थात मदिरा का वर्णन प्राचीन काल से ही किसी न किसी रूप में होता आया है। धर्म काव्यों में इसका परिष्कृत रूप 'सोमरस' के रूप में प्रयोग किया गया है, जिसके सेवन का अधिकार देवताओं अथवा राजाओं को ही हुआ करता था। केवल भारतीय काव्य में ही नहीं अपितु विश्व काव्य में हाला का प्रयोग देशकाल एवं परिस्थिति के अनुरूप अलग–अलग प्रतीकों के रूप में होता रहा है। विभिन्न काव्यों में प्रयुक्त 'हाला' मात्र मदिरा अथवा शराब का द्योतक ही नहीं अपितु सामाजिक समरसता, हृदय की निश्छलता एवं जीवन के उदात्त आनन्द का भी प्रतीक है। यह भौतिकता एवं आध्यात्मिकता का समन्वय करता है। ऋग्वेद में सोमरस का बार–बार उल्लेख है। 'सोम' को वनस्पति के देवता का प्रतीक माना गया है। सिद्ध साहित्य में तो बिना सुरा और सुन्दरी के सिद्धों को सिद्धि की प्राप्ति नहीं हो सकती ।

हिन्दी काव्य में सन्त कबीर दास[1] ने 'मदिरा' शब्द का प्रयोग आध्यात्मिक एवं रहस्य के प्रतीक के रूप में किया है। अन्य सन्त कवियों ने भी 'हाला' शब्द का प्रयोग किया है। मीरा[2] के गीत काव्य में हाला का प्रयोग प्रेम की मुग्धावस्था को प्रकाशित करने के लिये हुआ है। रीतिकालीन एवं छायावादी

कवियों ने भी इसका उल्लेख किया है। किन्तु सर्वाधिक मुखर एवं स्वच्छन्द रूप से इसका प्रयोग उत्तर हालावादी हरिवंश राय 'बच्चन' एवं पद्मकान्त मालवीय आदि कवियों ने किया। उन्होंने छायावादी कविता की प्रकृति के प्रति व्योमोह के जाल से मुक्त होकर कविता को मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन से जोड़ा है। हालावादी मस्ती भरी कविता को छायावाद की निराशावादी कविता की प्रतिक्रिया कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

मनुष्य सत्य–असत्य, उचित–अनुचित तथा जीवन–मृत्यु के यक्ष प्रश्न मे उलझा हुआ सदा भयाक्रान्त जीवन जीने के लिये अभिशप्त है। समाज में व्याप्त जाति–वर्ग, धर्म–क्षेत्र–भाषा, शिक्षित–अशिक्षित, अमीर–गरीब और छोटा बड़ा आदि की विषमता ने सामाजिक समरसता को छिन्न–भिन्न कर दिया है। बुद्धि, विवेक और वैज्ञानिकता का दम्भ भरने वाला मनुष्य स्वार्थ और लोलुपता की पराकाष्ठा पर पहुँचकर बड़े से बड़ा अनर्थ करने में संकोच नहीं करता।

हरिवंश राय 'बच्चन' की हालावादी कविताओं में सामाजिक समरसता, आध्यात्मिक उदात्तता और सहज मानवतावाद को प्रतिष्ठित किया गया है। इस शोध पत्र के माध्यम से उनके काव्य में अन्तर्निहित सहज सौन्दर्य, सामंजस्यता की भावना एवं मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करना हमारा प्रमुख उद्देश्य है। निराश, हताश, एवं अवशाद ग्रस्त संवेदनशील मानव में आशा, हर्ष, उल्लास, उत्साह एवं ऊर्जा का संचार करना इस शोध पत्र का मुख्य उत्स है।

साहित्यावलोकन

प्रचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक कवि मनीषियों ने गूढ़ से गूढ़ भावों को सहजता से बताने के लिये प्रतीकों एवं बिम्बों का सहारा अवश्य लिया है। हरिवंश राय 'बच्चन' की कविताओं में प्रयुक्त शब्द प्रतीकों एवं बिम्बों को भलीभॉति न समझने के कारण ही उन्हें मात्र हालावादी, मस्ती, एवं फक्कड़ कवि के रूप जाना एवं समझा गया जो कि उनके कविता की न्याय परक व्याख्या नहीं है।

हरिवंश राय 'बच्चन' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अब तक अनेक समीक्षा ग्रन्थ, शोध प्रबन्ध, एवं शोध पत्र लिखे गये। 'बच्चन की आत्मकथा'[3], 'बच्चन का रचना संसार'[4] आदि पुस्तकों में बच्चन के काव्य में निहित विविध काव्य–तत्त्वों पर प्रकाश डाला गया है। वर्तमान में लिखे गये शोध पत्र एवं लेख–'महाकवि हरिवंश राय बच्चन का जीवन परिचय और उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ'[5], 'खय्याम की रुबाइयाँ और बच्चन का हालावाद'[6], 'हालावाद और बच्चन'[7] आदि लेखों में बच्चन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षेप में ही प्रकाश डाला गया है। उनके काव्य में प्रयुक्त प्रतीकों एवं बिम्बों का न्याय परक मूल्यांकन न हो पाने के कारण बच्चन के काव्य को मात्र हालावाद और मस्ती के काव्य तक ही सीमित कर दिया गया। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके काव्य में प्रयुक्त प्रतीकों को व्याख्यायित करके उनके काव्य में अन्तर्निहित उदात्त भावना को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है

बच्चन के काव्य में प्रतीक विधान

प्रतीक के रूप में 'हाला' का प्रयोग मनुष्य की भोगवादी प्रवृत्ति के फलस्वरूप हुआ। इससे जुड़े शब्द 'प्याला', 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मस्ती' आदि शब्दों पर कुछ कवियों ने आध्यात्मिकता का लबादा भी पहनाया। बच्चन तक आते–आते इन शब्दों को प्रतीकों के रूप प्रयोग किया जाने लगा। जीवन की क्षणभंगुरता, यौवन की मस्ती व हस्ती, सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक समरसता, एकान्त तन्मयता, मानसिक विक्षोभ, आदि प्रतीकों के संवाहक के रूप में बच्चन का काव्य विकसित होता है। हालावादी गीतकाव्य में 'हाला' का प्रतीक अपने तात्विक स्वरूप में तो भौतिकवादी है किन्तु इसका वास्तविक संकेत आध्यात्मिकता की ओर ही है। जगजीवन की क्षणभंगुरता के प्रतीक हेतु जिस हाला का प्रयोग किया गया है वह ब्रह्म की सत्यता की ओर इशारा भले ही न करे किन्तु मिथ्या–जगत की अभिव्यक्ति अवश्य करता है। हरिवंश राय बच्चन के काव्य में कभी–कभी एक ही शब्द अनेक प्रतीकात्मक स्वरूपों में प्रयुक्त हुए हैं। कुछ शब्द प्रयोग एवं परिवेश के अनुकूल अपने प्रतीकात्मक स्वरूप को बदल देते हैं जिससे उसका अर्थ भी बदल जाता है–

मधुशाला

इसका शाब्दिक अर्थ है–'मदिरा की दुकान' किन्तु बच्चन ने इसे अनेक प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया है–

हंस मत्त होते पी–पीकर, मानसरोवर मधुशाला।[8]

यहाँ हंस जीव का प्रतीक है और मधुशाला मानसरोवर का।

'काल प्रबल है पीनेवाला, संसृति है यह मधुशाला'।[9]

यहाँ मधुशाला संसृति का प्रतीक है।

'पीकर खेत खड़े लहराते, भारत पावन मधुशाला'।[10]

यहाँ मधुशाला भारत वर्ष की पावन धरा का प्रतीक है।

सौ सुधारकों का करती है काम अकेली मधुशाला।[11]

यहाँ मधुशाला 'सुधारक' के प्रतीकात्मक स्वरूप में प्रयोग किया गया है।

'मैं शिव की प्रतिमा बन बैठूँ, मन्दिर हो यह मधुशाला'।[12]

यहाँ शिव मन्दिर के प्रतीक के रूप में मधुशाला का प्रयोग किया गया है।

'कितनी अरमानों की बनकर, कब्र खड़ी है मधुशाला'।[13]

यहाँ अरमानों एवं अनेक प्रबल इच्छाओं के कब्र के प्रतीक के रूप में मधुशाला का प्रयोग हुआ है।

हाला

हाला का शाब्दिक अर्थ है– 'मदिरा', 'सोम' 'शराब' आदि। बच्चन जी ने अपनी हालावादी कविताओं में इसे गंगाजल, हिमजल, प्रियतम, सुख का अभिराम स्थल, जीवन के कठोर सत्य, क्षणभंगुरता आदि अनेक प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया है–

'प्रियतम तू मेरी हाला है, मैं तेरा प्यासा प्याला'।[14]

इस पंक्ति में कवि सूफीवाद से प्रभावित है, जिसमें ईश्वर को प्रियतम और स्वयं को विरहिणी आत्मा के प्रतीक के रूप में माना है।

'बने पुजारी प्रेमी साकी, गंगाजल पावन हाला'।[15]

यहाँ साकी अर्थात मदिरा पान कराने वाला पुजारी और हाला अर्थात मदिरा को गंगाजल के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है।

'हिम श्रेणी अंगूर लता सी, फैली हिमजल है हाला'।[16]

यहाँ हाला को हिमजल के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है।

'उद्दाम तरंगों से अपनी, मस्जिद,
गिरिजाघर–देवालय,
मैं तोड़ गिरा दुंगी पल में,
मानव बन्दीगृह निश्चय,
उल्लास–चपल, उन्माद–तरल,
प्रतिपल पागल–मेरा परिचय'।[17]

यहाँ सुख की उद्दाम लालसा के प्रतीक के रूप में कवि ने हाला का प्रयोग किया है। हाला का परिचय यही है कि यहाँ मन्दिर, मस्जिद, और गिरिजाघर में कोई भेद नहीं है, सभी मानव समान हैं।

'औरों के हित मेरी हस्ती, औरों के हित मेरी मस्ती,
मैं पीती संचित करने को, इन प्यासे प्यालों की बस्ती'।[18]

यहाँ हाला का प्रयोग यौवन, हस्ती व मस्ती के हुआ है।

'क्षीण, क्षुद्र, क्षणभंगुर, दुर्बल, मानव मिट्टी का प्याला,
भरी हुई है जिसके अन्दर, कटु मधु जीवन की हाला'।[19]

इस प्रकार कवि वच्चन ने हाला शब्द को प्रसंगानुकूल अनेक प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया है।

साकी

साकी शब्द का अर्थ है 'मदिरा वितरक'। कवि ने इसे विगत स्मृतियाँ, बादल , चित्रकार, मृत्यु, पौधे, प्रातः, मुरली, नदी, पुजारी, भारतमाता आदि प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया है–

'दर्द नशा है इस मदिरा का, विगत स्मृतियॉ साकी हैं'।[20]

यहाँ साकी शब्द विगत स्मृति के रूप में प्रयोग हुआ है।

'बादल बन–बन साकी आये, भूमि बने मधु का प्याला'।[21]

यहाँ साकी के लिये बादल और मधु के प्याले के लिये भूमि शब्द का प्रयोग किया गया है।

'अति उदार दानी साकी है, आज बनी भारतमाता'।[22]

यहाँ साकी को भारत माता के रूप में प्रयोग किया गया है।

प्याला

प्याला शब्द का प्रयोग मदिरा पात्र के रूप मे होता है। कवि ने इसे स्वयं भूमि, फूल, तारा, शीशा आदि विविध प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया है।

'प्रियतम तू मेरी हाला है, मैं तेरा प्यासा प्याला'।[23]

यहाँ कवि ने प्रियतम को हाला और स्वयं को प्यासा प्याला बताया है।

'ले ले फूलों का प्याला।[24] अथवा
भरकर तारों का प्याला'।[25]

इन पक्तियों मे कवि ने फूलों और तारों को प्याला के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है।

मधुबाला

इसका शाब्दिक अर्थ है–काल्पनिक सुन्दरी।

मधुबाला को भोग्या नायिका के प्रतीक स्वरूप प्रयोग किया गया है।

'मधु प्यासे नयनों की माला, मैं मधुशाला की मधुबाला'।[26]

मधुपात्र

यह मदिरा पीने का विशेष पात्र है। इसे जीवन के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है–

'लघु मानव का कितना जीवन, फिर उस पर
इतना क्यों बन्धन,
यदि मदिरा का ही अभिलाषी, पी सकता कुछ
गिनती के कण,
चुल्लू भर में गल सकता है, उसके तन का
जामा खाकी'।[27]

बच्चन के काव्य मे वैयक्तिक कुण्ठा के प्रतीकों का भी प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है–

'जिसकी कंचन की काया थी, जिसमें सब सुख की छाया थी,
उसे मिला देना पड़ता है, पल भर में मिट्टी के कण में,
निर्ममता है जीवन में'।[28]

'सतरंगिणी' काव्य संग्रह का गीत 'इन्द्रधनुष की छाया में' एक प्रतीक गीत है। यह कविता जीवन के सतत परिवर्तनों को अभिव्यक्त करने में पूर्ण समर्थ है। जब मनुष्य का जीवन पूर्ण अस्त–व्यस्त होता है तब वह एक सही जीवन साथी की तलाश में सही नारी की तलाश करता है। अस्त–व्यस्त जीवन में यदि मयूरी रूपी नारी मिलती है तो उसका जीवन व्यवस्थित हो जाता है और यदि नागिन रूपी नारी मिल जाती है तो जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ता है–

'बनकर केन्द्र खड़ी तुम हो तो, मैं जीवन की परिधि बनाऊँ'।

इस कविता में प्रयुक्त अरुणशिखा, कोकिल, बुलबुल, और पपीहा जीवन में चारों अवस्थाओं के प्रतीक हैं। 'चार खेमे चौंसठ खूँटे' कविता संग्रह में संकलित कविता 'मरणकाले' में महाप्राण निराला के व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है। इसमें गरुड़, सिंह, सर्प निराला के व्यक्तित्व के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि हरिवंश राय बच्चन के काव्य में प्रयुक्त शब्द अपने प्रतीकात्मक स्वरूप को अभिव्यक्त करने में पूर्ण समर्थ हैं। प्रतीकात्मक शब्दों के माध्यम से भाव हृदय की गहराइयों तक उतर जाते हैं। शब्द चयन और प्रतीक विधान उनकी कविताओं में नये रूप में अवतरित हुए हैं। ये प्रतीकात्मक शब्द उनके निजी व्यक्तित्व और चिन्तन का उद्घाटन होते हुए भी सामाजिक सरोकारों से सम्पृक्त हैं। उनके काव्य में प्रयुक्त भौतिक हालावाद की मस्ती जब प्रतीकात्मक स्वरूप में करवट लेती है तो उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक चिन्तन की अजस्र धारा स्वाभाविक रूप से प्रस्फुटित हो जाती हैं। यह प्रतीकात्मक अर्थ ही उनके 'हालावाद' को अधिभौतिकता से

आध्यात्मिकता के उत्तुंग शिखर पर प्रतिष्ठित कर देता है–

दोनों रहते एक न जब तक, मन्दिर–मस्जिद में जाते।
बैर बढ़ाते मन्दिर–मस्जिद, मेल कराती मधुशाला।।[29]

अथवा

हंस मत्त होते पी–पीकर, मानसरोवर मधुशाला।[30]

अंत टिप्पणी

1. *'मन मस्त हुआ तब क्यों बोले,*
   सुरत कलरी भई मतवारी, मदवा पी गई बिन तोले।'
   द्विवेदी, डॉ0 हजारी प्रसाद, कबीर ग्रन्थावली, पृष्ठ–112, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 1992
2. *'मधुबन जाय भयो मधुबनिया, हम पर डारो प्रेम का फंदा'*
   चतुर्वेदी, परशुराम, मीराबाई पदावली, पृष्ठ–50, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2002
3. *कुमार, अजित, बच्चन की आत्मकथा, प्रकाशक–नेशनल बुक ट्रस्ट, 2005*
4. *चौधरी, डॉ0 तनुज, बच्चन का रचना संसार, भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्टिब्यूटर्स, फैज़ाबाद, 2005*
5. *www.gajabduniya.com/harivansh-ray-bachchan-biography-in-hindi-55, 9 oct] 2015*
6. *a&www.ajtak.intaday.in/starg/harivanshraybachchan,29 april, 2019*
7. *शर्मा, डॉ0 एस0 के0, हालावाद और बच्चन, hk Sharma.blogspot.com/2017/03/blog-post.html,3 march 2017*
8. *बच्चन, हरिवंश राय, मधुशाला, पृष्ठ–43, राजपाल एण्ड सन्स, ग्यारहवॉ संस्करण 2015*
9. *वही, पृष्ठ–73*
10. *वही, पृष्ठ–44*
11. *वही, पृष्ठ–57*
12. *वही, पृष्ठ–19*
13. *वही, पृष्ठ–23*
14. *वही, पृष्ठ–30*
15. *वही, पृष्ठ–19*
16. *वही, पृष्ठ–44*
17. *बच्चन, हरिवंश राय, मधुबाला, पृष्ठ–73–74, राजपाल एण्ड सन्स, ग्यारहवॉ संस्करण 2015*
18. *वही, पृष्ठ–58*
19. *बच्चन, हरिवंश राय, मधुशाला, पृष्ठ–45, राजपाल एण्ड सन्स, ग्यारहवॉ संस्करण 2015*
20. *वही, पृष्ठ–14*
21. *वही, पृष्ठ–30*
22. *वही, पृष्ठ–45*
23. *वही, पृष्ठ–43*
24. *वही, पृष्ठ–33*
25. *वही, पृष्ठ–41*
26. *बच्चन, हरिवंश राय, मधुबाला, पृष्ठ–25, राजपाल एण्ड सन्स, ग्यारहवॉ संस्करण 2015*
27. *बच्चन, हरिवंश राय, मधुबाला, पृष्ठ–11, राजपाल एण्ड सन्स, ग्यारहवॉ संस्करण 2015*
28. *बच्चन, हरिवंश राय, 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ ' कविता से उद्धृत।*
29. *बच्चन, हरिवंश राय, मधुशाला, रुबाई–52, पृष्ठ–45, राजपाल एण्ड सन्स, ग्यारहवॉ संस्करण 2015।*
30. *बच्चन, हरिवंश राय, मधुशाला, रुबाई–44, पृष्ठ–45, राजपाल एण्ड सन्स, ग्यारहवॉ संस्करण 2015।*